संब ग्रोब विब/एफ.डी  $\sqrt{76-85/44881}$  — चंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं वरफैक्शनल ट्रनों इस्जी-नियमं. 14/4, मथुरा रोड, फरीदायाद के श्रमिक श्री राजेन्द्र सिंह तथा उसके प्रयन्थकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायानिर्णय हेनु निर्दिष्ट करना बाांछनीय समझते हैं ;

इस लिए. स्रव सौद्योगिक विवाद स्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यात इसके दारा सरकारी प्रधिपूचना सं० 5415-3-अम 68/15254 दिनांक 20 ज्न. 1968 के साथ पडते हुए स्रिधिमूचना सं० 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त स्रिधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादस्रत या उसमें सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे जिला मामला न्यायनिर्णय एवं पंचार तीन मास में देने हेन निदिन्द करने हैं जो कि उक्त प्रवन्धिकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादस्र मामला है या विवाद से सुसंगत स्रथवां सुद्धान्यत मामला है:---

क्या श्री राजेन्द्र सिंह की मेवाघ्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं गो वि वि वि प्रफिन्छ ही. | 76-85 | 44888 - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं व परफैन्शनल ट्रनों इन्जी-नियर्स 14/4, मथुरा रोड, फरीदाबाद के श्रमिक श्री मुन्ता सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है ;

ग्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब औद्योगिक विवाद अधिनियुम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शंक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415—3—अम 68/15254. दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495—जी श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को बिवादप्रस्त या उससे सुसगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतृ निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री मुन्ता सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचिन नया ठोक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं ग्रो विव/एफ डी /76-85/44895 ---चंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं परफैक्शनल ट्रनों इन्जीनियसें, 14/4, मथुरा रोड, फरीदाबाद के श्रीमक श्री विश्वनाथ तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीबोगिक विवाद है;

स्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यमाल विवाद को त्यायित ग्रंथ हेन् निर्दिश्य करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, सब सौद्योगिक विवाद सिक्षितियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हिरायणा के राज्यशल इसके द्वारा सरकारी स्रिधिसूचना संज 5415-3-अम 68/15254, दिनांक 20 जून' 1968 के साथ पढ़ते हुए स्रिधिसूचना संज 11495-जो अन 57/11245 दिनांक 7 फह्नरी, 1958 द्वारा उक्त स्रिधिनियम को धारा 7 के स्रिधीन गठित अस न्यायालय, फरीदाबाद को विवादस्त या उससे सुसंगत हा उससे सम्बन्धत नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेनु निर्दिण्ट करने हैं जो कि उक्त प्रवस्त को तथा अभिक के बोच या तो विवादस्त मामना है या विवाद से सुसंगत स्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री विश्वनाथ की से बाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किह राहत का हकदार है ?

सं भ्रो.वि./एफ.डी./76-85/44902.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै. परफैबशनल ट्रनों इत्जीनियर्स, 14/4, मयुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री लाल बहादुर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीचोणिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांक्रनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, बौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाण के राज्यपाल इसके द्वारा नरफारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 करवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अने न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादयस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में दैने हेनु निर्दिष्ट करने हैं जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री लाल बहादुर की सेवाग्रों का समानत त्यायोक्ति तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस <mark>राहत का</mark> हकदार है ?